

२
श्वभ्रमधनुः, वामकर्कनीयाभर्कवक्रवल्गुसंवीणा, सर्वास्त्रतमश्रुता ॥ दहिनि
सर्वसाक्षात्, अमिहलासमयुता ॥ वाङ्मय्या वापिनीद्वी, यथिवीक
दसंज्ञावा, नीलकुवर्ण, मधुलानकयंसि, गा ४ द्विकुजाटदुसिख, नगुरुय
विकुचिदा ४ अं कृष्णयासगर्क, न्यांवक, वक्रधमश्रुता ४ ॥ वा ॐ नमः ४ आर्य उग्रः
गायादयो नक्तुटाये ॥ नमः ४ आवक्यत्यकवृद्धवाधिसत्त्वकाधवाङ्मय, धर्मस

यस्य ४ नमः ४ रावणपदमगुयव, महाकाव्निकाय, अकमूनयगथागाया ४ ह
कसम्यकं वज्राय ॥ अवमया, कर्मकस्मिन्समयरागवानयद्यमाल्यगिविसिख
वविह्वकिस्मरासहकारिद्रुसधनसाई वाधिसत्त्वगाधनवकाधवाङ्मयनेसाई
विष्णुधरगाधेवयिनालवकिरुकुटीवेवगावागवकिस्मथा, माविचिनीं रुद्रः
लीयेव, कावागवकिटथ, माविचीयर्ष, रुद्रवीकुरुगवत, कस्याल्यना, माम

3
कियायु बाकथा कथ ४ रागवनसुखाय रागवानश्रुवलाकीग ४ लाकानामनकः
यायसास्त्रावयवियुद्ध कि रागवनसुहिमर्वहु हाननिर्मललावनाश रागवन
आर्याकावायाकूलमारुहवकिहीना नानाउग्रव्याधि विशकलाकनायकाना
नावधुनिन्यानि नानावधु कानातव कवधकाटयधुनि वाधिसत्त्वामनक
सहाकथांमथ महाधाव निवजुगारा नायमं सत्त्वानाविनयाथय ४ यउग्र

बावयुसुक्रम कथुकिनाश्रुननिरुयला लिटययाकि ४ डक्षकटमहाहीम्वः
दननविरुधिरुमवडाईमधिरुंयाय कालामधुलमरथगं सावाययिऊक
ऊटा मधु। क कवध कूलमनाधा बाकुलामंमकरुं हयस्यायिरुयंकवमनाववंवि
अरुकाविध्व विधरुथानमरुगारसामवन्दनमिर्ग संवदानकयुजिर्ग वा
धिसत्त्वगालेध्वन्यं संरुगंरुकिवत्सर्वनाश्रुयरावमकुलं सर्वहावहिनायकं ४

साहसवदमहारावंसम्यक् यथैवमथाह कृत्वा कलगावावशिमतुवाज्ञानं सर्वसत्तामद्याव
दमुनाज्जाह ॥ साधु २ महापाह्वा गृध्रवक्रामिवावधी मृगयस्याधुवधमाकुरु विनश्यं
किल याम्कम् । आयावहु ऊननंस्वमोहाग्यवर्धनं यस्य कथं गगं वापियुक्तं
स्यापि विद्यकभायस्यापिसुखसत्तास्य नरयं विद्यकं कविहस्यमममसु संयाक
मयिरंराकलाकव वाकसासर्वयक्ति ॥ १५ ॥ वक्रं कुरु कुरु स्याव देवावरासुथादः

वि
यावोसत्तामहर्द्विका ४२६ क्रिकं महासत्त्वयस्वतांभवनिय २०० गृग्याद्वावय ४
थपिसां गया प्राकिसो महास्युनं महासुखमयं निवागादवक्रिकम ॥ १६ ॥ स्याकुरु
धीं सर्व धर्मस्केवावृता कथा सर्वकुरु न्यधुं रुलं लरुं तावु संसय ४०० लयमहान
तावायं धावधी सुनिमान्नव ४०० कथा विषय कथा वाधिसत्तामहासयादयं गवा
दकाकावा लावनाद्या सुमागव ४ सर्वरूपवसुक्ति नातां वक्रायासी दिवो कस ४ नाः

मनंदाय नंदाया, कथाया न्या कृत्वा नमः ॥ वाङ्मार्गश्चैव वाङ्मयवसावश्चिदलमया ॥
ताम कल्या विसावा कायकि, रश्मि वृधिया सिन ॥ गम्य वक्रां कविशक्ति, महासत्त्वस्य
निरासः ॥ ला कया लायु गहा क, श्रुत्वा लावा ककायिका ॥ य स्मा विष्णुश्च नद, आदि
ला गुरु संयकं, कमा वा रुरुनाथश्च, पात्रयानि सदवतमयस्य गुरु सत्त्वकः
॥ सहस्र रुगायि वाशयस्मिन् वाङ्मयवराणि सदा यत्र निवृत्तय उवम् ॥ अस्माभ्युयाः

० मम रुद्रा, रुद्रं वंद्यमाद्य कुरु कल्याय ॥ ० मुमगं नदयाय स्य कस्य चित् ॥ वक्रयं
याननाम रुद्र सर्वसिद्धिदायकं ॥ गुरु कलाय नमः ॥ सीलस्य कलाय यदापयत् ॥ सर्व
मन्त्रालयाय मां ध्यावन्ती सर्वसिद्धिदाक ॥ तस्याह रुगागं सर्वं कृत्वा कस्य वा वलं ॥
कुड्यायिव सनाम कि, यश्चेना भ्रात्रय ननव ॥ तस्य यर्वदिमत्यु, स्वयं या वाच
मात्र जिगृह्णीताय सर्वसर्व सत्त्वानां कथयतामूदाहयत् ॥ वाङ्मनमाहः

६
गवरो आर्यो उग्रगवायदो न क कटायेः ॥ ॐ नमः सर्वं अवकष्य कवृद्ध वाधिसुल
काधवाकवृद्ध धर्मसंघ लघनमारगवकयवमगुववमहाकावृधीकाय भक्त
मनयकथगकाया ॥ हे कसम्य कं वृद्धा यमागय थ ॥ ॐ उरगु २ म हा उ र य उ ग वृध
उग्रगाव न क कट यि ए भ ए क कट उ ई कट व द्वा एवं जं कि क क न यामवका क्रावि
कमकटन वणी वमालार व र म द्वा कला ला गुलि ख म द्वा र्ध र्ध र्ध कटि मृ खि म

हामृखि रु स २ म द २ म द नो त्स क म दानाठय कूलखबी कूलंद लि कूलमागवें बी कू
लकालिनि वम २ सू व ग २ सू व ग म क स व र ख वि वि कृ क ड द्वा म हा ना ख वा य उ
काटी सस्का म्द र्ध र्ध वि द्वा कालाल वम न सं या गिर गु व न द वी कलालि कं का
विका वानल काल लाहनि काल कं काल विधम मिव क म हा काल व य ध वी शि म
हा कालि कालि सद म नी व हा बी व ऊ व हा बी य द्वा व हा बी व हा वा म्द य नि व कालि

[illegible]

कूट २ खट २ घट २ विघट २ गट २ षट २ षटय २ मटय २ खटात्रम २ अ, वलि सि. कः
लीकं धीष २ यु कलि न मृदु ऊ यु कलि न दूत वहन नयन कल २ कालय २ वऊ २
वऊ गऊ, वऊ काला नयन लय रु, वऊ काला वला धि क म वि २, वऊ यु रु म धु ल व ऊः
व २, वऊ वा बा हिरु, वू वि २ घ रु स नी सका ली स ध र्मा धि द ह २ रु सिं दू व स र्व वि
घा न व र्व ऊः मू धी व न्द, अ ऊ रु, अ य बा ऊ रु, अ म रु, अ य वि मि रु, अ य वि मि रु य

[illegible][illegible]

२
 हिंती वकुवहिती समभधनि समयावका विभी समव २ समय समय वेरग, वीव ना
 यकी वकुनायकी यी ० नायकी कामभवी कामवृष्ववृष्व महारगनि धाव वृष्ववः
 इवि विवि विवि वृष्ववृष्व विती महा वृष्ववृष्व महसुय विव हिंती माला विपदव
 भी महा विप्रा यथा कनि रुकुं य २ सर्व मालान् ४ माषय २ सफ सागाना तघाटय २ स
 व ३ रुय इशान की वय २ सर्व ग्रहान् माहय २ सर्व ज्ञान् मुखाय २ सर्व ऊर्क वा रुसान्

रगाव कि महा कवृष्वकारध्ववी वरु २ मांसय विवा वं सर्व सत्ता नायक अंमधि २ मः
 हामृषि विरामृषि मृषि विमृषि दाय दामृषि वन्दव रुमृषि वरु कहि वी वरु
 अकिनी रुदय मूल सि महा रुष्व किं किती धिं विवि व्या युवर्मा सुदि रुक्यन
 महा काध वा रु म्पारु सि रुव वरु यगल नागम रुव रस नागम रु क रु सि मधि
 वं डि गम विव रुष्व साव रुक विगुह २ रु २ ही २ ग रु रु रु मा की ल क प ला व

सासिना के भगुस वर म कृता मधिमा लाय विवस्मि र या दधी १० श्री विवस्मि र वरु
 द वृदा कर्षधी १० काल य वधी के भगु क वर कवी ने ला का कर्षधी सर्व म थ ग र गु क
 ह द य म हा मू द धिस्मि र म हा या य म हा मा या मा या वि भा हि ति मा या का ल न य न
 व ल २ वि व ल २ स व ल २ के भगु क न म स्म र व वि भा धि र क व ह य न म हा क ल्या निः
 सं नि र वि व २ व व स व ल र वी व स न मि र य व म म यु ल म दाय के र ति हं व हः

व जां क म धा दि धी या म स्म टा न श्र नि धि य व रु य म म हा स क्ते म हा व रु ध ल य व यि
 धी ध र्म भगु र न ग र व म २ सर्व या गि धी सर्व म यु ल यु कि क का य न्या म र रु व
 धि स मा लि नी वि व ग र वि व्वा रु ग र ति ल य व द २ व यु व गु धि क म स्म क व द
 म यु ल ग र ग र अ व धा अ व धा अ व धा द य स नि र अ व धा म यु ल व रु क लि का
 ल व र क रु स का ल वा रि सर्व दि द्र वि र्थ स नि रा ४ अ स र्व वि द्या ग र र म हा सर्व म यु

लघुकिं, महाकाव्यधिकं, एकानवत्सव, महामन्त्रा सोने विधि महामन्त्र गार्गसर्वमः
कुमुदा विद्यातत्त्वार्थसंक्रान्तिवरुह्योयद सकाविधि महामन्त्रा गार्गसहस्राक्षम
हस्तकुङ्कु, सैतसाकि, माहय २ नाक्षय २ घाटय २ संलय २ मालय २ गाय २ रुद्रय
२ विश्वय २ उल्हादय २ सर्वइय यइ दानु रुगाव कि, पिरगा रु ककट रु उरुट ३ नमा
सुगं स्वाहा रावत्सपुकिं स्वाहा राया गिधी राशवंदि रु स्वाहा रा सर्वतथा रागसमय

विहिरु स्वाहा रा अयुतिरुत विद्य स्वाहा रा अयुतिरुत यराव स्वाहा रा उ लाया कर्षः
सि स्वाहा रा उं डी स्वाहा रा उं रुं : स्वाहा रा उं रुं : स्वाहा रा उं डी स्वाहा रा मणी वक्रवर्णिनी
स्वाहा रा वरु वक्रमुल स्वाहा रा वृयिनीय स्वाहा रा अयुतिनिय स्वाहा रा रुद्र किमृषि
स्वाहा ॥ वराहमूखि स्वाहा रा रुगां गमर्थीय स्वाहा रा मारु गशवंदि रु स्वाहा रा माह
रुद्र कुलवचि रु स्वाहा रा अश्वानवाशिनीय स्वाहा रा मरु कलि कविप्रिय स्वाहा रा माह

नीय स्वाहा ॥ विभाहनीय स्वाहा ॥ विष्णुधनी स्वाहा ॥ चक्रवीर्य स्वाहा ॥ महाविर्य स्वाहा ॥
रश्मिह विर्य स्वाहा ॥ हानजकिनी स्वाहा ॥ हानामरुतममृगस्व स्वाहा ॥ धर्मशक्रुहानः
गरु स्वाहा ॥ महावाधिविरुवस्व स्वाहा ॥ महासमय स्वाहा ॥ कलाकधर्मनि स्वाहा
महासाहस्यमदनी स्वाहा ॥ रु ४ स्वाहा ॥ रुव ४ स्वाहा ॥ रु रु वं स्वाहा ॥ वज्रवाला हि ॐ
स्वाहा ॥ वज्रवा स्वाहा ॥ सर्वमधुलपूजित स्वाहा ॥ सर्वमधुलबीजाधिप स्वाहा ॥

यकचक्राय स्वाहा ॥ समास्वास्तकविस्वाहा ॥ अथ यदस्वाहा ॥ चक्रं सर्वसत्त्वानां च
 सर्वकर्मण्युत्तमं ॥ अथ यदस्वाहा ॥ सर्वकर्मण्युत्तमं ॥ अथ यदस्वाहा ॥ सर्वकर्मण्युत्तमं ॥
 अथ यदस्वाहा ॥ सर्वकर्मण्युत्तमं ॥ अथ यदस्वाहा ॥ सर्वकर्मण्युत्तमं ॥ अथ यदस्वाहा ॥
 सर्वकर्मण्युत्तमं ॥ अथ यदस्वाहा ॥ सर्वकर्मण्युत्तमं ॥ अथ यदस्वाहा ॥ सर्वकर्मण्युत्तमं ॥

ॐ मा २३ मा २३ पा दा सि धि कु वृ स्ता हा ॥

मि र्ग स्ता या वृ ष दि

संसांजन

लो ध

क पु

ह ल

र क च ड न

आ ४४ द ४४ का थि

2675

UCLA ARCHIVES